nwda.gov.in

देश के भूजल दोहन में आई कमी, आंशिक सुधार

संजीव गुप्ता ● नई दिल्ली

देश में भूजल का अति दोहन बड़ा संकट बनता जा रहा है, लेकिन एक सुखद समाचार यह है कि पिछले दो साल के दौरान देशभर में न सिर्फ भूजल निकासी में कमी आई है, बल्कि भूजल उपलब्धता भी बीते वर्षों के बराबर बनी हुई है। वर्ष 2020 में देश में 398 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) भूजल उपलब्धता थी, जिसमें से 245 बीसीएम भूजल की निकासी कृषि, घरेलू और औद्योगिक उपयोग के लिए किया गया था, जबकि 2022 में कुल 398 बीसीएम भूजल की उपलब्धता में 239 बीसीएम की ही निकासी हुई। यानी 2020 की तुलना में 2022 में भूजल निकासी में छह बीसीएम की कमी आई है।

सेंटर फार साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा विश्व पर्यावरण

2020 में देश में भूजल उपलब्धता थी 398 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम), जबकि दोहन हो रहा था 245 बीसीएम, 2022 में 239 बीसीएम का ही हुआ दोहन

दिवस के मौके पर जारी स्टेट आफ एनवायरमेंट (एसओई) रिपोर्ट 2023 में यह सच विस्तार से बयां किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, भूजल निकासी का चरण भी सुधरा है। 2020 में भूजल निकासी का चरण 62 प्रतिशत था, जबकि 2022 में यह 60 प्रतिशत रहा। भू-जल निकासी के विभिन्न चरण होते हैं। इसका मान शुद्ध वार्षिक भूजल की निकासी/शुद्ध वार्षिक भूजल उपलब्धता के आधार पर निकाला जाता है। इससे पता चलता है कि देश के कुल स्थानों में कितने ऐसे स्थान हैं, जहां भू-जल दोहन सुरक्षित श्रेणी में है या कहां पर अति भू-जल दोहन हो रहा है।

भू-जल निकासी के चरण में 70 प्रतिशत तक निकासी को सुरक्षित माना गया है। उदाहरण के लिए यदि जमीन में 100 लीटर भू-जल रिचार्ज किया जा रहा है और उसमें से 70 लीटर पानी की निकासी की जा रही है, तो वह सुरक्षित रहेगा। इसी तरह 70 से 90 प्रतिशत तक भूजल निकासी खतरनाक और 90 से 100 प्रतिशत तक गंभीर श्रेणी में मानी जाएगी, जबकि 100 प्रतिशत से भी ज्यादा पानी की निकासी अति भूजल दोहन है। यानी इसका आशय हुआ कि जितना पानी जमीन के अंदर एक वर्ष में रिचार्ज किया गया, उससे भी ज्यादा पानी जमीन से बाहर निकाल लिया गया।

रिपोर्ट बताती है कि 2022 में न सिर्फ सुरक्षित भूजल दोहन वाले स्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है, बल्कि भूजल के दोहन और अति दोहन वाले स्थानों की संख्या घटी है। 2022 में 7089 स्थानों से भू-जल दोहन के नमूने एकत्र किए गए, इनमें कुल 4780 स्थान सुरक्षित, 885 स्थान खतरनाक, 260 गंभीर और अति दोहन वाले स्थानों की संख्या 1006 रही, जबकि 2020 में 6965 नमूने ही लिए गए थे इनमें 4427 स्थान ही सुरक्षित, 1057 स्थान सेमी खतरनाक, 270 स्थान गंभीर और 1114 स्थान भूजल के अति दोहन वाले स्थान थे। सबसे चिंताजनक यह है कि खारा पानी के स्थानों में वृद्धि हुई है।